सत्रीय कार्य की सूचना

बी.जे. उपाधि के पश्चात एक वर्षीय एम.जे. पाठ्यक्रम हेतु

पाठ्यक्रम - पत्रकारिता में स्नातकोत्तर (एम.जे.)

सत्र : 2016-17

सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि : 30 अप्रैल 2017

क्र.	प्रश्नपत्र कोड	विषय
1	MJ –101	जनसंचार माध्यमों के लिए लेखन
2	MJ – 102	फीचन लेखन एवं पत्रिका संपादन
3	MJ – 103	जनसंचार शोध प्रविधि
4	MJ – 104	जनसंचार के सिद्धांत
5	MJ – 105	विशेषीकृत पत्रकारिता एवं समाज
6	MJ – 106	न्यू मीडिया प्रोडक्शन
7	MJ – 106	न्यू मीडिया एवं समाज
8	MJ – 108	परियोजना कार्य

ज्ञान शांति मैत्री

दूर शिक्षा निदेशालय

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

गांधी हिल्स, वर्धा - 442001 (महाराष्ट्र) भारत

संपर्क : दूरभाष - 07152-241040

नोट - सभी विद्यार्थी सत्रीय कार्य अंतिम तिथि तक संबंधित केंद्र जहां कि विद्यार्थी ने प्रवेश लिया है, अवश्य जमा कर दें।

सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि : 30 अप्रैल 2017, सायं 05:00 बजे तक

2016-17 : सत्रीय कार्य (Assignment) के विषय

क्र.	प्रश्नपत्र कोड	विषय
1	MJ –101	जनसंचार माध्यमों के लिए लेखन
2	MJ – 102	फीचन लेखन एवं पत्रिका संपादन
3	MJ – 103	जनसंचार शोध प्रविधि
4	MJ – 104	जनसंचार के सिद्धांत
5	MJ – 105	विशेषीकृत पत्रकारिता एवं समाज
6	MJ – 106	न्यू मीडिया प्रोडक्शन
7	MJ – 106	न्यू मीडिया एवं समाज
8	MJ – 108	परियोजना कार्य

सत्रीय कार्य का प्रारूप -

दूरशिक्षा के अंतर्गत अध्ययनरत एम.ए. पत्रकारिता एवं जनसंचार के प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों को उपरोक्त विषयों के सत्रीय कार्य पूर्ण करने हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र के लिए निम्नलिखित प्रारूप में सत्रीय कार्य (चार लघु उत्तरीय व एक दीर्घ उत्तरीय कार्य) करना होगा -

सत्रीय कार्य कोड - एमजेएमसी 1/2016-17 कुल अंक : 30 (20+10)

1- लघु उत्तरीय कार्य (लगभग 300 शब्द) - कुल संख्या : 04, अधिकतम अंक 05 अर्थात (04 × 05 = 20)

2- दीर्घ उत्तरीय कार्य (लगभग 800 शब्द) - कुल संख्या : 01, अधिकतम अंक 10 अर्थात (01 × 10 = 10)

नोट - सभी विद्यार्थियों से अपेक्षित है कि निर्धारित प्रारूप में सत्रीय कार्य का लेखनकार्य केंद्रित विषय पर दूर शिक्षा निदेशालय द्वारा उपलब्ध करवायी गई पाठ्य सामग्री के अध्ययन के पश्चात करेंगे । यह सत्रीय कार्य पाठ्य सामग्री, अन्य पुस्तक व संदर्भ द्वारा विकसित समझ और ज्ञान के आधार पर लिखेंगे। इस लेखन में विषयवस्तु के अंतर्गत ऐतिहासिक संदर्भ, अवधारणात्मक पहलू , समकालीन स्थितियों के साथ विभिन्न दृष्टिकोण, आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य और विश्लेषण का समावेश हो तथा उदाहरण सहित उल्लिखित किया जाना चाहिए जिससे विषय की प्रासंगिकता स्पष्ट दिखे ।

सत्रीय कार्य हेतु निर्देश -

१- **सत्रीय कार्य लेखन के प्रथम पृष्ठ पर अध्ययन केंद्र का नाम, पाठ्यक्रम कोड, पाठ्यक्रम का नाम, अनुक्रमांक, सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र/विषय/शीर्षक का नाम निम्नलिखित प्रारूप में लिखेंगे ।**

२- **अपना नाम, दर्शाया गया/पत्राचार का पता, दिनांक सहित हस्ताक्षर अवश्य उल्लेखित कीजिए ।**

३- **परियोजना कार्य हेतु निम्नवत कार्य सम्मिलित किए जा सकते हैं जिनमे प्रमुखतः -**

- शोध समस्या का परिचय
- शोध क्षेत्र का परिचय एवं चयन के आधार
- शोध के उद्देश्य और महत्व
- शोध साहित्य का पुनरावलोकन
- प्रमुख शोध प्रश्न
- शोध परिकल्पनाएं (यदि आवश्यक और प्रकट होने योग्य हों)
- इन बिंदुओं के बाद शोध परियोजना को एक उचित एवं प्रासंगिक रूपरेखा के अनुसार अध्यायीकरण कर प्रत्येक अध्याय के अंदर अन्य खण्ड को शामिल कर लेखन कार्य किया जाएगा।
- शोध में संबंधित कार्यों का विवेचन और विश्लेषण का कार्य एक अध्याय के अंतर्गत किया जा सकेगा। तत्पश्चात निष्कर्ष एवं आवश्यक सुझाव का लेखन किया जाएगा।
- निष्कर्ष के बाद संदर्भ सूची जिसमें पुस्तक, पत्रिकाएं, शोध पत्रिकाएं, समाचारपत्र, प्रकाशित रिपोर्ट, लेख आदि को उल्लेखित कर परियोजना कार्य को अंतिम रूप दे सकेंगे।

उपरोक्त बिंदुओं को अवश्य ध्यान रखकर लेखन कार्य करें। समूचे परियोजना कार्य में विषय संबंधित संदर्भ की भाषा–शैली के आधार पर लिखें। तत्पश्चात समुचित अध्यायीकरण को क्रमानुसार प्रस्तुत करें। जिसमें ध्यान रखें कि अध्याय के शीर्षक शोध विषय के अनुकूल युक्तियुक्त, शोध समस्या व प्रश्नों पर केंद्रित और प्रासंगिक हों।

1. निष्कर्ष स्पष्ट तथ्य और आंकड़ों के आधार पर लिखें। स्वयं के विचारों को यदि लिखना है तो सैद्धांतिक स्थितियों से जोड़कर उनके समक्ष स्थापित करें, अनावश्यक नहीं।

2. संदर्भ सूची आवश्यक रूप से प्रस्तुत करें।

3. इंटरनेट की सामग्री और तथ्यों की वैधानिकता को गंभीरता से जांचकर ही उपयोग में लाएं।

4. शब्दों का चयन और वाक्यों की रचना एक महत्वपूर्ण पहलू है इसलिए प्रत्येक स्तर पर संबंधित विषय की भाषा व शैली का ध्यान रखें। यथासंभव वाक्य संरचना और शोध कार्य की तारतम्यता बनाए रखें।

5. **इस संबंध में अभ्यर्थी अध्ययन केंद्र द्वारा भी सहायता प्राप्त कर सकते हैं या संपर्क कर सकते हैं। शेष यदि कोई अन्य आवश्यक प्रश्न हो तो ई–मेल से संपर्क किया जा सकता है।**

अध्ययन कार्य एवं लेखन हेतु शुभकामनाएं ।

दूर शिक्षा निदेशालय

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

अध्ययन केंद्र का नाम - .....
पाठ्यक्रम कोड - .....
पाठ्यक्रम का नाम - .....

अनुक्रमांक - .....
सत्रीय कार्य/विषय का नाम - .....

अभ्यर्थी का नाम - .....
पता - .....
.....
.....

दिनांक -

स्थान -

हस्ताक्षर

(विद्यार्थी का नाम)

पाठ्यक्रम - पत्रकारिता में स्नातकोत्तर (एम.जे.)

सत्र : 2016-17

1	MJMC - 101	**जनसंचार माध्यमों के लिए लेखन** **लघु उत्तरीय कार्य (लगभग 300 शब्द) - कुल संख्या : 04, अधिकतम अंक 20 अर्थात (04 × 05 = 20)** 1- टेलीविजन लेखन क्यों आवश्यक है ? इस लेखन की विशष्टताओं को बिंदुवार स्पष्ट कीजिए । 2- जनसंपर्क विभाग अपनी संरचना के अनुसार किस प्रकार कार्यकरता है? वर्तमान समय में जनसंपर्क किस प्रकार बदल रहा है ? विज्ञापन के प्रमुख तत्व क्या होते हैं? एक विज्ञापन की कॉपी की अनिवार्यताओं को दर्शाएं। 3- किसी मीडिया में सृजनात्मक लेखन की प्रमुख विधाओं को आधुनिक संदर्भ में किस प्रकार उपयोग किया जा सकता है ? 4- रिपोर्ताज एवं संपादन लेखन की विशेषताओं की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए। **दीर्घ उत्तरीय कार्य (लगभग 800 शब्द) - कुल संख्या : 01, अधिकतम अंक 10 अर्थात (01 × 10 = 10)** 1- व्यवहारिक दृष्टि से विज्ञापन लेखन के मूल आवश्यकताओं को बताएं। विज्ञापन लेखन कला के प्रमुख तत्वों और विज्ञापन सृजनात्मकता को बतलाएं।

2	MJMC - 102	**फीचन लेखन एवं पत्रिका संपादन** **लघु उत्तरीय कार्य (लगभग 300 शब्द) - कुल संख्या : 04, अधिकतम अंक 20 अर्थात (04 × 05 = 20)** 1- संपादकीय प्रबंधन के सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों पर दृष्टि स्पष्ट कजीए । 2- फिल्म और पुस्तक समीक्षा किस प्रकार भिन्न विधाएं हैं ? 3- पत्रकारिता और सामाज के अंतर्संबंधों को उदाहरण सहित बताएं । 4- स्वतंत्र पत्रकारों की दशा और दिशा पर टिप्पणी कीजिए ? **दीर्घ उत्तरीय कार्य (लगभग 800 शब्द) - कुल संख्या : 01, अधिकतम अंक 10 अर्थात (01 × 10 = 10)** 1- फीचर लेखन के तत्वों के अधार पर उसके बदलते स्वरूप की व्याख्या कीजिए तथा इसके गुण-दोषों के वैकल्पिक मार्ग की संभावनाओं को बतलाइए।

3	MJMC – 103	**जनसंचार शोध प्रविधि** **लघु उत्तरीय कार्य (लगभग 300 शब्द) - कुल संख्या : 04, अधिकतम अंक 20 अर्थात (04 × 05 = 20)** 1- प्रश्नावली और अनुसूची की उपयुक्तएं किस प्रकार प्रासंगिक होती है? 2- सामग्री विश्लेषण तकनीक के आशय और प्रक्रिया को विस्तार से समझाएं। 3- साक्षात्कार प्रक्रिया किस प्रकार संपन्न होती है ? साक्षात्कार के सोपानों को उल्लेखित कीजिए। 4- बहु लक की गणना किस प्रकार होती है ? **दीर्घ उत्तरीय कार्य (लगभग 800 शब्द) - कुल संख्या : 01, अधिकतम अंक 10 अर्थात (01 × 10 = 10)** 5- निदर्शन के आधार और विभिन्न प्रकार की प्रचलित निदर्शन तकनीक को बतलाएं। इसके गुणों व समस्याओं को भी उल्लेखित कीजिए।

4	MJMC – 104	**जनसंचार के सिद्धांत** **लघु उत्तरीय कार्य (लगभग 300 शब्द) - कुल संख्या : 04, अधिकतम अंक 20 अर्थात (04 × 05 = 20)** 1- सामाजिक उपयोगिता के संदर्भों जनसंचार की अवधारणा स्पष्ट कीजिए। संप्रेषण को कौन से तत्व प्रभावित कर सकते हैं ? 2- परंपरागत लोकमाध्यमों की लोकजीवन में क्या उपयोगिता है ? इसके प्रभावों की व्याख्या कीजिए। 3- विभिन्न प्रकार के माध्यम सूचना प्रौद्योगिकी से किस प्रकार प्रभावित हुए हैं ? स्पष्ट कीजिए। 4- सूचना और वाक्-अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के वैधानिक आधार पर टिप्पणी कीजिए। **दीर्घ उत्तरीय कार्य (लगभग 800 शब्द) - कुल संख्या : 01, अधिकतम अंक 10 अर्थात (01 × 10 = 10)** 1- मैकब्राइड प्रतिवेदन की व्याख्या कीजिए।
	MJ-105	विशेषीकृत पत्रकारिता एवं समाज **लघु उत्तरीय कार्य (लगभग 300 शब्द) - कुल संख्या : 04, अधिकतम अंक 20 अर्थात (04 × 05 = 20)** 1- भारतीय संदर्भ में पर्यावरण संकट के दौर में विज्ञान पत्रकारिता की प्रासंगिकता को स्पष्ट कीजिए।

		2- समकालीन मीडिया की विषयवस्तु और स्वास्थ्य पत्रकारिता की चुनौतियों को उल्लेखित कीजिए। 3- पत्रकारिता और समाज के सापेक्ष विधि संवाददाता के सरोकार की स्थिति बताएं। इनके आलोचना के प्रमुख कारण चिन्हित कीजिए। 4- वैश्विक मीडिया की भूमिका मीडिया के एक्टिविज्म और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति किस प्रकार की रही है ? **दीर्घ उत्तरीय कार्य (लगभग 800 शब्द) - कुल संख्या : 01, अधिकतम अंक 10 अर्थात (01 × 10 = 10)** 1- धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण मीडिया के लिए किस प्रकार जरूरी है? मीडिया को धर्म और आध्यात्म जैसे प्रसार के उपकरण के रूप में आप किस प्रकार देखते हैं ? सुसंगत व्याख्या कीजिए।
	MJ-106	न्यू मीडिया प्रोडक्शन **लघु उत्तरीय कार्य (लगभग 300 शब्द) - कुल संख्या : 04, अधिकतम अंक 20 अर्थात (04 × 05 = 20)** 1- भारतीय संदर्भ में नागरिक पत्रकारिता की स्थिति पर टिप्पणी करें। 2- मोशन कैमरा के विभिन्न शॉट और कैमरा एंगल की विकसित तकनीक को उल्लेखित कीजिए। 3- डिजिटल तकनीक ने टेलीविजन और रेडियो प्रस्तोताओं को किस प्रकार के बदलावों के बीच स्थापित किया है? 4- इंडोर और आउटडोर शूटिंग हेतु प्रकाश व्यवस्था (लाइटिंग तकनीक) को विस्तार से समझाइए।

		दीर्घ उत्तरीय कार्य (लगभग 800 शब्द) - कुल संख्या : 01, अधिकतम अंक 10 अर्थात (01 × 10 = 10) 1- रेडियो एवं टेलीविजन निर्देशन की तकनीक और संपादन प्रक्रिया के विभिन्न पक्षों को उदाहरण सहित बतलाएं।
	MJ-107	न्यू मीडिया और समाज **लघु उत्तरीय कार्य (लगभग 300 शब्द) - कुल संख्या : 04, अधिकतम अंक 20 अर्थात (04 × 05 = 20)** 1- जनमाध्यम के रूप में न्यू मीडिया की बदली तस्वीर ने अन्य प्रचलित माध्यमों पर किस प्रकार प्रभावी हुयी है? 2- सोशल मीडिया पर व्यवसायिक मीडिया ने अपनी संभावनाओं को किस प्रकार स्थापित करने का प्रयत्न किया है ? 3- न्यू मीडिया हेतु वैधानिक नियंत्रण के प्रासंगिक प्रावधानों पर प्रकाश डालिए। 4- समाचारपत्र के प्रसार और वितरण प्रणाली को विस्तार से समझाइए। **दीर्घ उत्तरीय कार्य (लगभग 800 शब्द) - कुल संख्या : 01, अधिकतम अंक 10 अर्थात (01 × 10 = 10)** 1. डिजिटल और मल्टीमीडिया तकनीक के युग में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की खतरे क्या हैं ? इन चुनौतियां के समक्ष उपाए सुझाइए।